

‘क्षमा’ ‘वीर्य’ ‘भूषणम्’

पर्युषण पर्व, सम्बत्सरी महापर्व
एवं क्षमायाचना दिवस
के उपलक्ष्य में
आध्यात्मिक मंगलकामनाएं



ऊर्जावाणी



- क्षमा वही व्यक्ति कर सकता है जिसका हृदय विशाल हो, जिसमें सहज सरलता हो और अपने जीवन को अभिभूत करने वाली मृदुता हो।
- जो क्षमा करना नहीं जानता वह न निज पर शासन कर सकता है न अन्य व्यक्तियों पर।
- शब्दोच्चारण के साथ मन में जमा हुआ शत्रुता का भाव समाप्त हो जाना ही क्षमायाचना है।
- क्षमाशील वह होता है जो अतीत को विस्मृत करता है, वर्तमान की चिंतनधारा बदलता है और भविष्य में किसी प्रकार की छलना न करने का संकल्प करता है।

आचार्य श्री तुलसी



अरब के रेतीले मैदान में एक अमीर ऊँट पर बैठ कर जा रहा था। उसका नौकर पीछे बैठा था। उसके हाथ में छाता था अमीर को धूप न लगे। उसके हाथ में पंखी थी ताकि अमीर को पसीना न आए। दोनों मजे से जा रहे थे। कुछ ही दूर गए होंगे कि उनकी दृष्टि चल रहे एक फकीर पर पड़ी। वह अकेला था, कोई साथी नहीं था। चिलचिलाती धूप में वह पैदल जा रहा था। उसकी चाल में मस्ती थी। अमीर ने उसको देखा। अहंकार जाग उठा। वह बोला – अरे फकीर! इतनी तेज धूप में ऐसे घूम रहा है, बिना मौत मर जाएगा। मरेगा तो अमीर मरेगा। ऊँट आगे बढ़ गया। फकीर अपनी मस्ती में पीछे-पीछे चलना लगा।

कुछ समय बीता। तेज आंधी आई। अमीर और उसका नौकर दोनों संभल नहीं सके। दोनों नीचे गिर गए और मर गए। ऊँट भी लड़खड़ाकर गिर पड़ा और मर गया।

फकीर निकट आया। पहचान गया। बोला – अरे! मेरे जैसे ही तो यह आदमी था। पर अमीर के अहं ने मेरे मित्र को बैमोत मार डाला। व्यक्ति अपने अहं के कारण अपने आपको बहुत बड़ा मान लेता है और दूसरों को छोटा मानता है। इसलिए अहंकारी नहीं क्षमाशील बनो।

आचार्य श्री महाप्रज्ञ



क्षमा याचना का महापर्व व्यक्ति के मन के भीतर व्याप्त कषाय को मंद करने का एक उपक्रम है। आवश्यकता इस बात की है कि हम सभी लोगों से अतीत में जाने-अनजाने में हुई त्रुटियों के लिए खमत खामणा कर क्षमा मांगें और आने वाले समय के लिए बेहतर करने का प्रण ले। 'खामेमि सव्वे जीवां' श्लोक का प्रतिदिन एक बार चितारना चाहिए। खमत खामणा से आत्मा की विशुद्धि हो सकती है। क्षमायाचना करने से चित्त में प्रसन्नता की अनुभूति होती है। सभी जीवों के साथ मैत्री का भाव रखने की आवश्यकता है आत्मभाव पुष्ट करने की दृष्टि से भाव की विशुद्धि होना जरूरी है।

आचार्य श्री महाश्रमण



संवत्सरी महान पर्व है। इसकी तुलना किसी अन्य पर्व से नहीं की जा सकती। मन में व्याप्त अहंकार के पहाड़ों को ढहाने की व्यक्ति को आवश्यकता है। क्षमा व्यक्ति के भीतर फैले जहर को अमृत बनाने का माध्यम है। हमारे यहां तीन चिकित्सा पद्धति है। एलोपैथी, होम्योपैथी और आयुर्वेद। क्षमा भी एक चिकित्सा है जो व्यक्ति को भीतर से स्वस्थ और मजबूत बनाती है। हमें कायाकल्प की प्रक्रिया अपनाने की आवश्यकता है। हमारा जीवन शांति व साधना के पथ पर अग्रसर होना चाहिए।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा

अध्यक्षीय ▼

प्रिय बहनों,

सादर जय जिनेन्द्र,

सावन व भाद्रव माह पर्वों की शुरुआत के महीने है। चारों तरफ हरियाली ही हरियाली। इस अद्भुत छटा में मन उल्लास व उमंग से भर जाता है एक नई स्फूर्ति का संचार होने लगता है। चातुर्मास शुरुआत के साथ हुई धर्म अराधना जप, तप की लहर भी प्राणवायु बनकर हमें शक्ति सम्पन्न बनाती है।

तेरापंथ धर्म संघ के मुख्यपर्व आषाढी तेरस से ही शुरु हो जाते हैं। तेरस को महामना आचार्य भिक्षु का जन्म दिवस फिर चातुर्मासिक पक्खी और आषाढी पूर्णिमा को तेरापंथ स्थापना दिवस।

बहनों! चतुर्मास प्रारम्भ हो गया है। वैश्विक महामारी कोरोना के कारण घर बैठे ही ज्ञान, ध्यान, स्वाध्याय, तप, जप करना है। न हम साधु-सन्तों का व्याख्यान सुनने जा सकते हैं और ना ही दर्शन रोज कर पा रहे हैं। लेकिन हां हम घर बैठे छोटे-छोटे त्याग, प्रत्याख्यान, सामायिक उपवास आदि कर कर्मों की निर्जरा कर सकते हैं। ज्यादा तपस्या भी इम्यूनिटी को कम कर सकती है इसलिए सबसे बड़ी साधना है समता की साधना। संतोषी जीवन का अभ्यास, निर्मोही बनने का अभ्यास।

हम सराहें अपने भाग्य को कि हमें आचार्य महाश्रमण का युग मिला। जिनके आशीर्वाद से अनंत आनंद की अनुभूति होती है। अनेक समस्याओं का समाधान उनकी वाणी से मिल जाता है पर इस बार कोविड-19 की वजह से चतुर्मास में न ही दर्शन कर सकते और न ही साक्षात व्याख्यान सुन सकते। पर बहनों! प्रतिदिन प्रातः 9 बजे आचार्य प्रवर का व्याख्यान Live आ रहा है जिसे आप पूरे परिवार के साथ बैठकर धर्म की गंगा को घर बैठे ही बहानी है इससे हमारे बच्चों में भी आध्यात्मिक, नैतिक संस्कार आयेंगे। यही समय है लोकडाउन में बच्चों को संस्कारी बनाने का। हम जैन है जैनत्व हमारा गौरव है कम से कम हमारे परिवारों में पर्युषण के दौरान जमीकंद का प्रयोग न करें, आठ दिन खाद्य संयम की प्रेरणा दें, रात्रि भोजन के त्याग की महत्ता बताएं। प्रतिक्रमण हमारा गंगास्नान है इसका आठ दिन उपक्रम बनाएं। हमारे सबसे बड़े पर्व पर्युषण और संवत्सरी। और उससे भी बड़ा महापर्व है क्षमायाचना दिवस, अपने द्वारा कृत कार्यों का समालोचन करें। भीतर झांके, अपने को आंके। गलती होना स्वाभाविक है पर प्रायश्चित क्षमायाचना इसके आलम्बन है।

तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्यों के महत्वपूर्ण दिन भी इसी भाद्रव मास में आते है हमारे चतुर्थ आचार्य श्रीमद् जयाचार्य का 149वां निर्वाण दिवस भी 16 अगस्त 2020 भाद्रव कृष्ण12 को है। और उसी दिन शुरुआत होती है हमारे पर्युषण पर्व की। सम्वत्सरी के दो दिन बाद ही आचार्य श्री कालुगणी का 85 वां स्वर्गवास दिवस। भाद्रवा सुदी 9 को गणाधिपति गुरुदेव श्रीतुलसी का 87 वां विकास महोत्सव। भाद्रवा सुदी 13 स को तेरापंथ के संस्थापक आचार्य भिक्षु का 218 वां भिक्षु चरमोत्सव। सभी आचार्यों के प्रति सम्पूर्ण नारी समाज का शत् शत् वंदन।

पन्द्रह अगस्त (स्वतंत्रता दिवस)

देश की ताकत, हिन्दुस्तान का रक्षा कवच व स्वतंत्र भारत के स्वाभिमानी तिरंगे को प्रणाम। जय हिन्द के नारों के साथ स्वयं हिमालय जिसे सलामी दे रहा है उस मातृ भूमि को प्रणाम। स्वतंत्रता दिवस हमें अपनी आजादी की कीमत का अहसास कराता है कि कैसे अपने प्राणों की आहुति देकर हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने हमें यह आजादी दिलाकर स्वतंत्र परिवेश में जीने का अधिकार दिया।

पन्द्रह अगस्त का दिन भारत देश के लिए महत्वपूर्ण दिवस है यह गरिमा मंडित महिमा मंडित दिन है। देश भर के शिक्षण संस्थानों एवं सरकारी संस्थानों व पूरे भारत में उल्लास के साथ यह दिन मनाया जाता है। 15 अगस्त स्वतंत्रता

का दिन है। धन्य है वे माताएं जिन्होंने अपने सुपुत्रों को ऐसे संस्कार दिए हैं, धन्य हैं वे सुहागिनें जिन्होंने वतन के लिए अपने सुहाग को कुर्बान कर दिया। देश भक्ति के उनके रग-रग में बसी हुई है जो अपने पति और पुत्र के बलिदान के बाद भी अपने पोते-पोतियों में देश भक्ति का संस्कार भर रही है। धरती माँ की तरह सहनशीलता का यह अनूठा उदाहरण है। कुर्बानी देता एक जन है पर उसकी कुर्बानी का असर बहुतों पर देखा जाता है

चलो फिर से आज वह नजारा याद कर लें,
शहीदों के दिल में बही वो ज्वाला याद कर लें
जिसमें बहकर आजादी पहुँची भी किनारे पर
देशभक्तों के खून की वो धारा याद कर लें।।

रक्षा बन्धन

श्रावण मास में भाई बहिन के स्नेह बन्धन का अनूठा सांस्कृतिक पर्व रक्षा बन्धन हमें स्नेह की अटूट शक्ति का अनुभव कराता है। राखी दायित्व बोध की चेतना का संदेश है। हम उन परम्पराओं को प्रोत्साहन दें जो संस्कृति सम्मत है, जो हमारी जीवन शैली, हमारे भाषा व्यवहार - हमारे खान-पान, हमारे रहन सहन और हमारे पहनावे को शालीन और समृद्ध बनाती है और कुल मिलाकर जो हमारे जीवन का विधायक निर्माण करती है। सही मायने में ये पर्व सम्पूर्ण मानव संवेदनाओं को प्रेम और एकता के सूत्र में बाधने के अनूठे माध्यम है।

इतिहास के पन्नों पर दृष्टिपात करें तो ऐसा लगता है कि जात-पात से दूर, वर्ण जाति के भेद को मिटाकर सुरक्षा कवच और रक्षा के अश्वास की कहानी इस त्यौहार के साथ जुड़ी हुई है।

रानी कर्मवती द्वारा जब मुगल शासक हमायूँ को राखी भेजी गई थी तो वो जात पात से ऊपर उठकर सम्मान एवं सुरक्षा के भावों से पिरोई हुई थी। महाभारत के परिप्रेक्ष्य में दृष्टिपात करें तो सुभद्रा द्वारा पाण्डवों की रक्षा के लिए भगवान कृष्ण को राखी बांधने का प्रसंग भी परिलक्षित होता है। रक्षा-बन्धन का यह पवित्र त्यौहार नैतिक एवं आदर्शों की दुहाई देता है। तो हमारी सांस्कृतिक परम्परा को जीवन्तता प्रदान करता है। आज के युग में महिला उत्पीड़न, कन्या भ्रूण हत्या जैसे अनेकों प्रसंग हर दिन पढ़ने-सुनने को मिलते हैं ऐसे में रक्षाबन्धन के इस त्यौहार की परम्परा भी कलंकित सी होती नजर आ रही है।

आवश्यकता है हम सब पुरुष और महिला के रूप रक्षा बन्धन के सूत्र को भाई-बहिन के पवित्र रिश्तों के साथ जोड़ें और इस पर्व की महत्ता को सुरक्षा के आश्वासन और विश्वास की डोर के साथ जोड़ें। एक दूसरे की सुरक्षा का भाव मन में जगाएँ। रक्षा बन्धन के पवित्र त्यौहार को उस पवित्रता के साथ निभाने का संकल्प मन में सजाएँ।

भाई से बहन की रक्षा का वादा है राखी
लोह से भी मजबूत एक धागा है राखी
जात पात और भेदभाव से दूर है राखी
एकता का पाठ पढ़ाती है राखी।।

सम्यक्त्व की सुरक्षा का पर्व है - पर्युषण

पर्युषण पर्व नहीं, किंतु महापर्व है। यह भाद्रव मास में सामान्य त्यौहारों की तरह आता है, इसलिए पर्व है किंतु यह पर्व पूर्ण आत्मशुद्धि का प्रेरक, उत्प्रेरक है। शरीर केन्द्रित पर्व शरीर सुख की सामग्री जुटाते हैं। आध्यात्मिक पर्व आत्मकेन्द्रित होते हैं। इसलिए वे आत्मसुख की सामग्री जुटाते हैं। पर्युषण का शाब्दिक अर्थ है परि-चारों ओर से सिमटकर, वसन-एक स्थान पर निवास करना या स्वयं में वास करना पर्युषण में कषायादि विकारों का उपशम करना। आत्मा, परमात्मा व अर्हत भगवान की भावपूर्वक उपासना करना पर्युषण है। साधार्मिक के साथ प्रेम एवं सहयोग पूर्ण व्यवहार करना पर्युषण है। आठ दिनों के पर्युषण पर्व में आठवां दिन संवत्सरी पर्व है यह दिन पूर्ण धर्म उपासना का दिन है इस दिन उपवास पौषध के साथ सांयकाल चालीस पाटी का प्रतिक्रमण भी किया जाता है और इसके नौवे दिन होता है क्षमाचायना दिवस, मैत्री दिवस। मैत्री दिवस के दिन सब एक दूसरे से अपने द्वारा हुई गलतियों के लिए सरल हृदय से क्षमायाचना करते हैं। पर्युषण पर्व के आठ दिन इस प्रकार है:-

खाद्य संयम दिवस (भाद्रपद कृष्णा-11) 15 अगस्त 2020 - खाद्य संयम दिवस पर हमें भोजन के प्रति विवेक जागृत रखने की प्रेरणा देता है। आहार का असंयम मन को चंचल बनाता है। भोजन का संयम न केवल साधना के लिए, स्वास्थ्य के लिए भी जरूरी है। खाने के संयम से बहुत सारी बिमारियों से सहज ही बचा जा सकता है। इस दिन कम से कम द्रव्य का प्रयोग करें।

स्वाध्याय दिवस (भाद्रपद कृष्णा-12) 16 अगस्त 2020 - पर्युषण का दूसरा दिन स्वाध्याय की प्रेरणा लेकर आता है। व्यक्ति जिस समय स्वाध्याय में रत रहता है वह बहुत सारे अशुभ कर्मों से अपने आप को बचा लेता है। आत्म विकास की यात्रा के लिए स्वाध्याय ही उत्तम साधन है।

सामायिक दिवस (भाद्रपद कृष्णा-13) 17 अगस्त 2020 - तीसरा दिन सामायिक दिवस। व्यापार में जो कमाई करते हैं वह केवल इस जीवन में ही काम आती है। सामायिक की कमाई अगले कई जन्मों तक काम आती है। सामायिक श्रावक की असली कमाई है। सामायिक की साधना से सभी प्रकार की परिस्थितियों में संतुलित रहने का अभ्यास पुष्ट होता है। जीवन में सफलता के लिए आवेश एवं आवेग को नियंत्रण करना जरूरी है। सामायिक की साधना से ही उन्हें नियंत्रित किया जा सकता है, समता की साधना की जा सकती है।

वाणी संयम दिवस (भाद्रपद कृष्णा-14) 18 अगस्त 2020 - व्यक्ति अनावश्यक बोलकर अपने जीवन में मुसीबतों को निमंत्रण दे देता है। बहुत सारी उपलब्धियों से, सिद्धियों से वंचित रह जाता है। पर्युषण का चौथा दिन वाणी संयम से हमें सीखना है कि कितना बोलना, कैसे बोलना, कहां बोलना। भाषा का प्रयोग विवेक से करते हुए सबके लिए हितकर भाषा ही बोलना चाहिये। सत्य बात भी मधुरता एवं मृदुता से बोलनी चाहिए। वाणी संयम की साधना व्यवहारिक जीवन के लिए बहुत जरूरी है।

अणुव्रत चेतना दिवस (भाद्रपद कृष्णा-15/1) 19 अगस्त 2020 - अणुव्रत अभियान युग प्रधान आचार्य तुलसी का अमर अवदान है। अणुव्रत जीवन को बदलने वाला एवं स्वस्थ जीवन को दिशा देने वाला एक उपक्रम है। “संयम ही जीवन है” का संदेश अणुव्रत देता है। संयम प्रधान जीवन शैली ही एक स्वस्थ समाज का निर्माण कर सकती है। चरित्र निर्माण अणुव्रत का मुख्य उद्देश्य है। देशवासियों का चरित्र ही राष्ट्र के अभ्युथान का आधार है। व्यक्ति अगर नहीं सुधरा तो सरकार की योजना सफल नहीं हो सकती। धर्म वही है जो हमारे जीवन व्यवहार में झलके।

जप दिवस (भाद्रपद शुक्ला-2) 20 अगस्त 2020 - हमारा मन बच्चे के समान नटखट है। वह एक जगह स्थिर नहीं रहता है। मन को वश में करने के लिए मंत्र का जाप नियमित और श्रद्धापूर्वक करने की प्रेरणा जप दिवस देता है। मंत्र साधना में सबसे अधिक आस्था का महत्व है। शुद्ध लक्ष्य और भावना से जप करने से जीवन पवित्र बनता है। भौतिक आकांक्षाओं से मुक्त होकर मोक्ष सिद्धि एवं आत्म विकास की भावना से ही मंत्र साधना करनी चाहिए। भौतिक सिद्धियां स्वयंमेव ही प्राप्त हो जाती हैं। आध्यात्मिक मंत्रों से हमारी प्राण शक्तियों का भी विकास होता है।

ध्यान दिवस (भाद्रपद शुक्ला-3) 21 अगस्त 2020 - मनुष्य के भीतर असीम शक्तियां छिपी हुई हैं। ध्यान के अभ्यास से वे शक्तियां जागृत हो सकती हैं। अपनी चेतना को अंतर्मुखी बनाने का सशक्त माध्यम है ध्यान। ध्यान की साधना से जीवन की दशा एवं दिशा में बदलाव आता है। आचार्य श्री महाप्रज्ञजी ने प्रेक्षाध्यान पद्धति का आविष्कार करके मानव को साधना की एक राह दिखाई है। प्रेक्षा ध्यान-मंत्र विविध शक्तियों का खजाना है।

संवत्सरी महापर्व (भाद्रपद शुक्ला-4) 22 अगस्त 2020 - पर्युषण का आठवां दिवस संवत्सरी महापर्व। पर्युषण के सात दिनों की आराधना के बाद हर श्रावक चिंतन करें कि मेरे भीतर कहीं कोई ग्रंथि तो नहीं रही। अगर हो तो उससे मुक्त होने का प्रयास करें। यह महापर्व सम्यक्त्व की सुरक्षा का संदेश लेकर आता है। ध्यान, स्वाध्याय, तप जप से कर्म दूर होते हैं एवं आत्मा का विकास होता है। मन के अहंकार को मिटाकर मन की गांठों को खोलें और सरल हृदय से सबसे खमत-खामणा करें तभी संवत्सरी महापर्व की सार्थकता होगी।

खमत खामणा (क्षमायाचना दिवस) (भाद्रपद शुक्ला-5) 23 अगस्त 2020

क्षमायाचना - मैत्री दिवस



हम सभी भगवान महावीर के अनुयायी हैं। भगवान महावीर ने “अहिंसा परमो धर्मः” तथा “क्षमा वीरस्य भूषणम्” का संदेश दिया। जिन्दगी का निर्वाह करते समय हमसे जाने अनजाने अनेक गलतियां हो जाती हैं। राग-द्वेष आ जाता है जैसे दीवाली से 15-20 दिन पहले घर की सफाई शुरू कर देते हैं उसी प्रकार 8 दिन पर्युषण में सम्बत्सरी पर्व की पूर्व तैयारी करते हैं यह संयम की दीवाली है। इस पर्व पर हम अपने मन में क्षमा भाव का दीपक जलाएं और उसे कभी बुझने न दें ताकि हमारा सम्यकत्व सुरक्षित रहे। आचार्य श्री भिक्षु ने अनुकंपा की चौपाई में कहा है कि मित्र से मित्रता का शत्रु से शत्रुता का अनुबंध चलता है उसे मिटाने का उपाय है - खमत खामणा। खमत खामना जैन परम्परा का प्रतीक शब्द है जो तन, मन के मैल को साफ करता है भाव और भव विशुद्ध करता है भविष्य को सुमधुर बनाता है। सबसे पहले परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी एवं मातृ हृदया साध्वी प्रमुखाश्रीजी से एवं सभी चारित्रात्माओं से सम्पूर्ण महिला समाज की ओर से शुद्ध अन्तःकरण से क्षमायाचना करते हैं।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की पूरी कार्यसमिति एवं सभी शाखा मंडलों की बहनों से कन्या मंडल की कन्याओं से शुद्ध अन्तःकरण से क्षमायाचना करते हैं। आशा है आप भी निर्मल मन से क्षमा करेगी।

उत्तम क्षमा का आया अनुपम मौका
जिम्हने हमारे क्रोधादि कषायों को बौका
गत दिनों में हुई भूलों का करे क्षमण
क्षमायाचना, क्षमादान के होगी आत्मा पावन
जाने अनजाने में हो जाती है कुछ गलतियां
अज्ञानता के बन जाती है मन में भ्रान्तियां
क्षमा मांगकर अपनी भूलों को करे क्वीकार
क्षमादान देकर ही होगी आत्मा भव पाव))

पुष्पा बैद
राष्ट्रीय अध्यक्ष - अ.भा.ते.म.मं.

क्षमापना के पावन पत्र पर सर्व प्रथम पूज्य गुरुदेव, श्रद्धेया महाश्रमणीवरम् एवं समूचे धर्मसंघ से करबद्ध विनयपूर्वक क्षमा-याचना करती हूँ।

बहिनों !

आप सबके साथ अनेक बार मिलने का बात करने का अवसर मिला है अतः क्षमापना के इस पावन पर्व पर सरल हृदय से क्षमा-याचना करती हूँ। सभी केन्द्रीय पदाधिकारीगणों से, ट्रस्टीजनों से एवं समस्त कार्यसमिति की बहिनों से खमत-खामणा।

कितने दिल टूटे होंगे, कितने दर्द बढ़े होंगे, शब्दों की आड़ में न जाने, कितने जख्म हुए होंगे।

क्षमापर्व की आवाज है, जरा साथ दीजिए, पुकार रहा है क्षमा पर्व, जरा ध्यान दीजिए।।

दिल के उद्गारों से, स्नेह की बरसात किजिए, एक साथ चलने की, वो ताल दीजिए।

साथ-साथ जीने की, आज कसम लिजिए, हम सब एक हैं, हर दिल से यह अहसास कीजिए।।

पुनः इस क्षमापना पर्व पर दिल की अनंत गहराईयों के साथ क्षमाप्रार्थी

शान्ता पुगलिया
प्रधान ट्रस्टी - अ.भा.ते.म.मं.

धर्म साधना की प्रक्रिया में क्षमा का महत्त्व भगवान महावीर की एक महान देन है। क्षमा स्वयं अपने मे ही सीमित नहीं है। उसके साध्य है मैत्री और क्षमता। कहा जाता है-

मैत्री का भाव जगाकर, सुपथ राह को अपनाया
हिंसा का कर त्याग, क्षमा का पथ दिखलाया,
वही महापुरुष जग में, महावीर कहलाया।
जिसने अपने जीवन में यह गुण है अपनाया,
धर्म पथ की राह को सुगम सरल है बनाया।
वही महापुरुष जग में, क्षमावीर कहलाया।

जैन धर्म हमारा त्याग के फलों से भरपूर वट वृक्ष की भांति हमारे मन आत्मा को प्रेरित करता है कि दूसरों के प्रति निश्चल रहे। पर्युषण महापर्व का समापन मैत्री दिवस के रूप में आयोजित होता है। हम मांगते हैं क्षमा तन मन समर्पित होकर संसार के हर प्राणी से और क्षमा करके बनाते हैं तन मन स्वस्थ व निर्जर।

दिल के किसी कोने पर किया हो सूक्ष्म सा भी प्रहार,
पर्युषण महापर्व पर मांगते हैं क्षमा बारम्बार।

उद्धार तो स्वयं का स्वयं से करना है और यह संयम, तप के द्वारा ही सम्भव है। इनके द्वारा आत्म-परिष्कार करे। क्षमा भी उसी साधना का अंग है। सारे जप, तप की अंतिम निष्पत्ति क्षमा ही है। क्षमा के अभाव में सब निरर्थक है। अंतर्मन की गांठें खोलने के लिए समता व मैत्री की धारा का बहाव जरूरी है।

क्षमा वीरो का है भूषण, क्षमा स्वर्ग का द्वार,
निर्जर हो जाये सब दूषण, मैत्रीमय हो जाये संसार।

तरुणा बोहरा
महामंत्री

प्यारी बेटियों

सादर जय जिनेन्द्र।

एक तरफ स्वतंत्रता के गीत
दूसरी तरफ आरोहण के संगीत
आ गई है
संयम व साधना के साथ, चातुर्मास की बयार
लेकर त्याग व तपस्या की फुहार
हो वीर वाणी का अमृतपान
प्रतिक्रमण से करें आत्मस्नान
अवलोकन करें अंतस का
समीक्षा करें कर्तृत्व की
निर्मल तन, पवित्र मन
स्वयं का करें परिष्कार
जाने अनजाने में हुई गलतियों के लिए
हर पल करें क्षमायाचना बार-बार॥

आशा है आप सभी स्वस्थ एवं प्रसन्नचित्त होंगे। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल केनिर्देशन में आयोजित 16वें वर्जुअल कन्या मंडल के वार्षिक अधिवेशन की सफलता हेतु आप सभी को बहुत-बहुत आभार व हार्दिक बधाई। हम गुरु दृष्टि को सर्वोपरि मानते हुए आध्यात्मिक, भावनात्मक, मानसिक, सामाजिक व राष्ट्रीय विकास के हर सोपान पर आरोहित होते हुए विकास की महती मंजिलों को तय करें यही मंगल कामना।

आपकी दीदी
रमण पटावरी

अनुप्रेक्षा अर्थात् गहन तत्व विचारणा। वस्तु स्वरूप का चिन्तन करना अनुप्रेक्षा है। जिस चिन्तन से भव्य साधक अन्तःस्फूर्त हो साध्य तक अनाबाध गति से अग्रसर हो पाए, आत्म साधना की विकट राहों में अम्लान चित्त से प्रगति करता हुआ मन्जिलारोही बन जाए, इसी कारण प्रज्ञा पुरुषों ने संवर के उपाय रूप बारह भावनाओं का समीचीन विवेचन किया है। मन पर मूर्च्छा का मैल, मोह का मैल, ममत्व का मैल, राग द्वेष का मैल, वासना का मैल, कषाय का मैल न जाने कितने मैल हैं। इस स्थिति में प्रेक्षा वहां तक पहुंच ही नहीं सकती। अनुप्रेक्षा मन को पवित्र करने का, मन पर जमे मैल को हटाने का माध्यम है, जरिया है और यह संभव है मैत्री की अनुप्रेक्षा द्वारा। इस बार हम दे रहे हैं 9 से लेकर 12 तक भावनाएं। शाखा मंडल जिस दिन भावना का कार्यक्रम समायोजित करें उसी दिन मैत्री की अनुप्रेक्षा भी करवाएं।

भावना

निर्जरा भावना

ज्ञान दीप तप तेल भर, घर शोधे भ्रम छोर।
या विधि बिन निकसे नहीं, पैठे पूरब चोर।।
पंच महाव्रत संचरण, समिति पंच प्रकार।
प्रबल पंच इन्द्रिय विजय, धार निर्जरा सार।।

अर्जुनमाली अणगार

चिन्तन - निर्जरा अर्थात् संचित कर्मों का क्षय होना। कर्म निर्जरा के उपायों - बारह प्रकार के तप की आराधना करना, उपसर्ग-परीषह-कषायों का चिन्तन-मनन कर उनके फल के बारे में विचार करना तथा सही मार्ग का चयन करना।

फल - इससे मनुष्य परीषह-उपसर्गों को समभाव के साथ ज्ञानपूर्वक सहता है ताकि कषायों पर विजय प्राप्त कर कर्मों का क्षय किया जा सके।

लोक भावना

चौदह राजु उतंग नभ, लोक पुरुष संठान।
ता में जीव अनादि ते, भरमत है बिन ज्ञान।।

(शिवराज ऋषीश्वर)

चिन्तन - लोक के यथार्थ स्वरूप का चिन्तन करना जैसे - लोक अनादि अनन्त है। षट्द्रव्यों के स्वरूप व उनके परस्पर सम्बन्ध का चिन्तन-मनन करना।

फल - लोक सम्बन्धित मिथ्या मान्यताओं का अन्त।

बोधिदुर्लभ भावना

धन - जन - कंचन राजसुख, सबहिं सुलभ कर जान।
दुर्लभ है संसार में, एक यथार्थ ज्ञान।

(भगवान ऋषभदेव के 98 पुत्र)

चिन्तन - इस लोक में मनुष्य जन्म, उत्तम-कुल, विशुद्ध बोधि मिलना अत्यन्त दुर्लभ है। यही एक ऐसी पर्याय है जिसमें धर्म को धारण करते हुए सम्यक् संयम तपादि के आचरण से कर्मयुक्त हुआ जा सकता है।

फल - मानव भव की दुर्लभता का भान कर अपने प्रयासों, कार्यों को सम्यक् दिशा की और प्रवृत्त कर जन्म-मरण को सार्थक करना।

धर्म भावना

याचे सुर तरु देय सुख, चिन्तित चिंता रैन।
बिन याचे बिन चिंतिये, धर्म सदा सुख दैन।।

(धर्मरुचि अणगार)

चिन्तन - मेरा अहोभाग्य है कि मुझे यह धर्म मिला है, जो प्राणी मात्र के कल्याण में सक्षम - समर्थ है। अतः इस धर्म के सतत् चिंतन व मनन से इसे आचरण में उतारने से ही जीवन की सार्थकता है।

फल - धर्मानुराग व सद्आचरण में वृद्धि। यर्था सत्यानुभूति तथा शाश्वत् सुखानुभूति की प्राप्ति होती है।



सुख से संकल्प

जीवन में मानवीय सद्गुणों के विवेकपूर्ण विकास की प्रक्रिया को ही साधना कहा जाता है। हार्दिक उल्लास और गहन मानसिक तृप्ति की अनुभूति कराने वाली साधना ही मनुष्य के उद्देश्य की सिद्धि कर सकती है। साधना तो वस्तुतः लगनपूर्वक की गई अविच्छिन्न चेष्टा है जो विश्वास और निष्ठा की सुदृढ़ नींव पर आधारित है। बहनों इस बार आपको “ॐ भिक्षु जयभिक्षु” की सवा लाख माला का जप अनुष्ठान करना है। जिन्होंने अभी तक शुरु नहीं की है वो अब भी शुरु कर सकते हैं। 21 माला रोज फेरने से यह लगभग 60 दिन में पूरा होता है।



कंठस्थ ज्ञान

पिछली नारीलोक में हमने भक्तामर स्रोत का 32 वां पद्य याद करने के लिए दिया था लेकिन 32, 33, 34, 35 पद्य याद नहीं करने हैं इसलिए आपको इस बार **36 - 40 तक पांच पद्य** याद करने हैं।

चौबीसी की गीतिका इस बार आपको **चन्द्रप्रभु, सुविधिप्रभु** याद करनी है। क्योंकि पिछली बार हमने भूल से वापिस सुपार्श्व प्रभु की गीतिका दे दी।

नवाह्निक आराधना

पूरणात् पर्व धर्मोच्च हेतुत्वात्, धर्म पूरणं पर्व इति भावना।

1. **खाद्य संयम दिवस** - 5 या 7 द्रव्य खाने का लक्ष्य रखे।
2. **स्वाध्याय दिवस** - परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण द्वारा लिखित पुस्तक “शिलान्यास धर्म का” वाचन करें नहीं हो तो कोई भी पुस्तक ले सकते हैं।
3. **सामायिक दिवस** - कम से कम 5 सामायिक व रात को संवर करने का लक्ष्य रखें।
4. **वाणी संयम दिवस** - हो सके तो पूरा दिन मौन नहीं तो कम से कम 5 घंटा मौन करने का प्रयास करें।
5. **अणुव्रत चेतना दिवस** - इस दिन **श्रावक संबोध** एवं **तुलसी प्रबोध** का वाचन करें।
6. **जप दिवस** - हो सके तो घर के सभी सदस्य मिलकर **ॐ भिक्षु, ॐ शांति** या **अर्हम्** का सवा लाख जप करें, नहीं तो जितना हो सके उतना करें।
7. **ध्यान दिवस** - ध्यान का कार्यक्रम अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा दिया जायेगा जिसकी विस्तृत रूपरेखा व्हाट्सप पर बता दी जायेगी।
8. **संवत्सरी महापर्व** - महापर्व पर अष्ट प्रहरी, षष्ट प्रहरी एवं चतुष्ट प्रहरी पौषध करने का प्रयास करते हुए धर्माधना करें।
9. **क्षमापना दिवस** - सर्वप्रथम परम पूज्य आचार्य प्रवर से एवं मातृ हृदया महाश्रमणीवरम् से क्षमा याचना करें, सभी चारित्रात्माओं, समणीवृंद से क्षमायाचना करें तथा परिवार, समाज एवं प्राणी मात्र से खमत खामना करें।

अधिवेशन ! अधिवेशन ! अधिवेशन !

बीता है एक वर्ष सहर्ष बढ़ना है हमें और आगे, आरोहण कर स्वयं का लक्ष्य की और कदम भागे, जप, तप व स्वाध्याय सभी में आये प्रभुता, ऐसे जुड़ेंगे तब निश्चय ही सफलता के धागे।

आओ बहनों, इस वर्ष कोविड-19 की महामारी के चलते हम Virtually एक दूसरे से मिले।



AAROHAN
A Step Up...

आरोहण

.... A Step up !

Virtually महिला अधिवेशन का प्रारूप !

नोर्थ जोन, इस्ट जोन

7 सितम्बर 2020

राजस्थान, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली, असम, नेपाल, बंगाल
बिहार, झारखण्ड, मेघालय, भूटान, नेपाल

वेस्ट जोन, साऊथ जोन

8 सितम्बर 2020

गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, उड़ीसा, आंध्र प्रदेश, केरल,
कर्नाटक, तेलंगाना, तमिलनाडु

साधारण सभा

9 सितम्बर 2020

सभी क्षेत्रों के अध्यक्ष एवं मंत्री Zoom पर जुड़ें।

ID व लिंक Whatsapp के माध्यम से भेजा जाएगा।

आरोहण - East Zone

विषय : APPRECIATION

दिनांक 11.7.2020 अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में अखिल भारतीय तेरापंथ कन्या मंडल के 16वें राष्ट्रीय अधिवेशन आरोहण का आयोजन डिजिटल प्लेटफॉर्म जूम के माध्यम से हुआ।

हम सबकी असीम आस्था के केन्द्र परम आराध्य गुरुदेव के मुखारबिन्द से विडियो द्वारा नमस्कार महामंत्रोच्चार के साथ 16वें राष्ट्रीय

अधिवेशन आरोहण का भव्य आगाज़ हुआ। संघ महानिदेशिका, महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा श्री कनकप्रभाजी के मंगल संदेश का वाचन अभातेममं की प्रधानन्यासी श्रीमती शांता पुगलिया ने किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती पुष्पा बैद ने आरोहण के विधिवत उदघाटन की घोषणा की। तेरापंथ कन्या मंडल, पूर्वांचल-कोलकाता द्वारा मंगलाचरण किया गया। कन्या मंडल राष्ट्रीय प्रभारी श्रीमती रमन पटावरी ने स्वागत वक्तव्य दिया।



राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती पुष्पा बैद ने कन्याओं को संबोधित करते हुए कहा कि अधिवेशन में अपनी बेटियों का तहे दिल से स्वागत करती हूँ। हमारा कोई एक लक्ष्य होना चाहिए। जिस पर हम आगे बढ़ सके और बिना भटके सीधी राह पर चलते हुए अपने लक्ष्य, मंजिल को पा सके। बेटियां शिक्षा के साथ-साथ आरोहण करें नैतिकता, आध्यात्मिकता एवं विनयशीलता में तथा बड़ों का सम्मान करें इसलिए नहीं कि वे बड़े हैं बल्कि इसलिए कि उनमें संस्कार है।

महामंत्री श्रीमती तरुणा बोहरा ने कन्याओं का उत्साह बढ़ाते हुए कहा कि हमें यह याद रखना चाहिए कि मंजिल कितनी भी ऊंची क्यों ना हो रास्ते सदा पैरों में ही होते हैं। हमेशा हार्डवर्क के साथ आगे बढ़ना है। पहाड़ इसलिए नहीं चढ़ना है कि दुनिया हमें पहाड़ पर देखें बल्कि हम पहाड़ से दुनिया को देखें। इसके पश्चात कन्या मंडल के कर्तृत्व की गूंज, कार्यों की एक छोटी सी झलक पावरपॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से दिखाई गई।

साउथ कोलकाता, भुवनेश्वर व गुवाहाटी कन्या मंडल द्वारा Appreciation के क्या-क्या फायदे हैं? इस पर सुंदर प्रस्तुति दी गई। कन्या मंडल सहप्रभारी श्रीमती नमिता सिंघी ने बहुत ही छोटे-छोटे Tips के माध्यम से कैसे Strong व Powerful बन सकते हैं? इस बारे में बताया।

इस सत्र के अगले चरण में सान्निध्य मिला लंदन में विराजित विदुषी समणी श्री प्रतिभाप्रज्ञाजी का। आपने पावरपॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से बहुत ही सरल शब्दों में आरोहण यात्रा के एक-एक सोपान के बारे में बताया। हमें अपने Senses का Positive Use करना है। छोटे-छोटे कार्यों में प्रशंसा करें, धन्यवाद कहें। माइंड पावर बढ़ाने के लिए प्रेक्षाध्यान को अपने दैनिक जीवन में शामिल करें। समणीजी ने कहा कि अवसर है, आकाश है, बस आरोहण करना है। इसके साथ ही कन्याओं की जिज्ञासाओं का समाधान किया।

कार्यक्रम के अंत में राष्ट्रीय प्रभारी श्रीमती रमन पटावरी ने सभी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने धन्यवाद के साथ आज के इस East Zone अधिवेशन के प्रथम सत्र के समापन की घोषणा की।

द्वितीय दिवस - आरोहण South Zone

विषय - Relaxation

12.7.2020 अभातेममं के निर्देशन में विभिन्न अंचलों में आयोजित हो रहे अखिल भारतीय तेरापंथ कन्या मंडल के राष्ट्रीय डिजिटल अधिवेशन आरोहण के द्वितीय दिवस का पड़ाव साउथ ज़ोन में

Relaxation : परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी के मुखारविंद से वीडियो द्वारा मंगलपाठ श्रवण कर आरोहण अधिवेशन के द्वितीय दिवस के द्वितीय सत्र का प्रारंभ। "आरोहण करना है मुझे" के साथ आर.आर.नगर बेंगलुरु द्वारा मंगलाचरण हुआ।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती पुष्पा बैद ने इस सत्र के प्रारंभ में कहा कि चिंता, अवसाद आदि कुछ ऐसी विकट समस्या

हमारे सामने उपस्थित हो रही है जो आरोहण के मार्ग में रुकावट पैदा करती है। आचार्य श्री महाप्रज्ञजी ने प्रेक्षाध्यान प्रयोग पद्धति के रूप में एक ऐसा उपक्रम हमें प्रदान किया है जो हमारे शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और व्यवहारिक तनाव को दूर करता है। परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमणजी ने हमें सिखाया है "आओ जीना सीखा" इससे हम तनाव मुक्त जीना सीखें।

Relaxed रहते हुए हमें कार्य करना है। चेन्नई कन्या मंडल के द्वारा एक सुंदर प्रस्तुति दी गई।

मदुराई, कोयंबटूर, हैदराबाद कन्या मंडल ने सुंदर प्रस्तुति द्वारा Relaxation के महत्व को बताया।

हमारे आज के इस द्वितीय सत्र के मुख्य वक्ता शिवांगी देसाई का संक्षिप्त परिचय कन्यामंडल प्रभारी श्रीमती रमन पटावरी ने दिया।

मुख्य वक्ता शिवांगी देसाई ने कन्याओं को संबोधित करते हुए कहा कि सकारात्मक सोच रखते हुए आरोहण करना चाहिए। हमें स्ट्रेस को खत्म करना होगा। स्वयं के प्रति हमें विश्वास रखना है। हमारे भीतर इतनी ताकत हो, इतनी काबिलियत हो कि हम चुनौतियों का सामना कर सके। स्वयं के प्रति पूर्ण विश्वास, कुछ कर दिखाने का जुनून यह सब कुछ आप कन्याओं को अभिमान की छत्रछाया में मिल रहा है और आप निश्चित रूप से पूर्ण Relaxation के साथ आगे बढ़ेगी, आरोहण करेंगी ऐसा विश्वास है।

महामंत्री श्रीमती तरुणा बोहरा ने मुख्य वक्ता के प्रति आभार ज्ञापित किया। आपने कन्याओं को संबोधित किया कि जिदगी जो है हल्की-फुल्की सी है, बोझ तो ख्वाहिशों का है। हमें अपनी ख्वाहिशों को संतुलित रखते हुए आगे बढ़ना है। महामंत्री ने पहलियों के माध्यम से कन्याओं को कहा कि हमें अपने भीतर के Ego को छोड़ना है। अगर Ego को हम छोड़ देंगे, उसे अपने ऊपर हावी नहीं होने देंगे तो हम Relax रहेंगे।

राष्ट्रीय प्रभारी श्रीमती रमन पटावरी ने lockdown के समय में आयोजित इस प्रतियोगिता के बारे में बताया और कहा कि कन्याओं ने बहुत ही सुंदर आचार्य श्री महाप्रज्ञजी के Sketches बनाकर भेजे हैं। जिसका परिणाम राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती पुष्पा बैद ने घोषित किया और सभी कन्याओं को बहुत-बहुत शुभकामनाएं प्रेषित की।

कार्यक्रम का सफल संचालन कन्या मंडल राष्ट्रीय सहप्रभारी श्रीमती नमिता सिंघी ने किया।

तृतीय दिवस - आरोहण Gujrat & Maharastra Zone

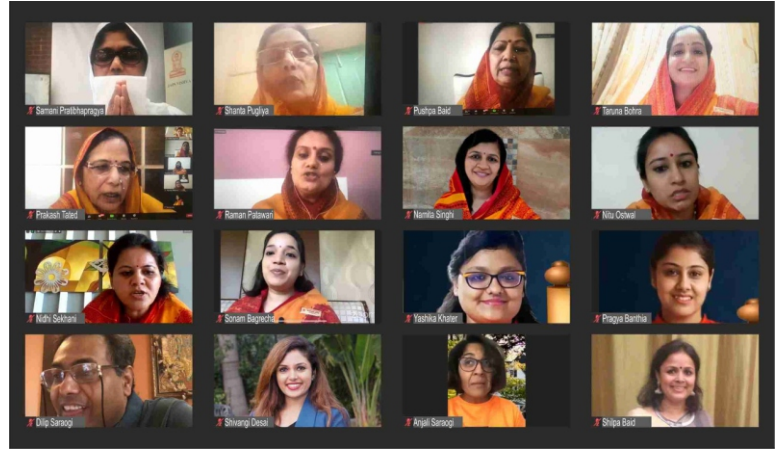
विषय - Opportunity

दिनांक 18.7.20, प्रधान ट्रस्टी श्रीमती शांता जी पुगलिया द्वारा नवकार मंत्र का संगान किया गया। मंगलाचरण पर्वतपाटिया कन्या मंडल व गुजरात की सभी शाखा मण्डल की कन्याओं द्वारा प्रस्तुत किया गया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती पुष्पा जी बैद ने सभी का स्वागत अभिनंदन करते हुए कहा कि हमें अपने सपनों को सफल करने के लिए पहले स्वयं पर विश्वास करना होगा। नई चीजों को सीखने के लिए कभी कोई अवसर नहीं छोड़ना चाहिए, हम अपनी खामियां एवं आलस्य के कारण अवसर गवां देते हैं। सावन भादों के अवसर पर ज्यादा से ज्यादा धार्मिक आराधना करें, रात्रि में संवर लेकर सो सकते हैं एवं खाली समय घर में सभी के काम में हाथ बँटाएँ। जिसे चाहती है कुछ करने की वो आंधियों में दीपक जलाना सीख जाते हैं। इसके पश्चात अहमदाबाद कन्या मंडल द्वारा एक भव्य प्रस्तुति दी गई।

कन्या मंडल प्रभारी श्रीमती रमण जी पटावरी ने मातृ हृदय प्रमुखा श्री जी के 80 वें जन्मदिवस पर वंदन करते हुए मुख्य वक्ता अंजलि जी सरावगी का स्वागत व सभी का अभिनंदन किया और कहा कि जब भी अपॉर्चुनिटी मिले उसे अपना कर आगे बढ़ना चाहिए, अवसर के साथ कई बार स्पीड ब्रेकर आ सकते हैं, हमें उनसे विचलित नहीं होकर आगे बढ़ना है।

अंजलि जी सरावगी द्वारा कन्या मंडल को मोटिवेशनल स्पीच दिया गया। आपने कहा कि मुझे दौड़ना अच्छा लगता था एक धुन सवार थी पर कैसे ये निर्णय नहीं कर पा रही थी तब मेरी बेटी ने मेरा हौसला बढ़ाया और मेरे भीतर एक जोश जगाया। हमें स्वयं को पहले मजबूत होना होगा। आरोहण के लिए जो opportunity मिले उसे स्वीकार करें।



Vote of thanks व दो मिनट का डोज़ देते हुए महामंत्री तरुणा जी बोहरा ने कहा कि सभी को सुअवसर मिलते हैं पर हम अपना efforts कितना लगाते है यह हमारे ऊपर निर्भर करता है। रात्रि किसी का इंतजार नहीं करती। मौसम किसी का इंतजार नहीं करता ,जो व्यक्ति पुरुषार्थ करता है वही जीवन में आरोहण कर सकता है।

तत्पश्चात मुंबई कन्या मंडल द्वारा सपने - सफर -सफलता इस पर एक प्रस्तुति दी गई

इसके पश्चात पालघर कन्या मंडल द्वारा एक प्रेजेंटेशन दिया गया जिसमें दर्शाया गया प्रकृति फिर से खिल उठी ,आडंबर हुआ खत्म, शुद्ध वायु का हुआ आगमन। सहमंत्री श्रीमती नीतू जी ओस्तवाल के द्वारा एक एक्टिविटी कराई गई। नीतू जी ने कहा जब हमारे सामने चुनौती आए तो हिम्मत न हारे उसे स्वीकार करें।

सत्र के समापन पर कन्या मंडल सह प्रभारी श्रीमती नमिता जी सिंघी द्वारा आभार ज्ञापित किया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन सह प्रचार प्रसार मंत्री श्रीमती सोनम जी बागरेचा ने किया।

चतुर्थ दिवस - आरोहण North & Rajasthan Zone

विषय - Harmony

दिनांक 19.7.20, इस सत्र का मंगल शुभारंभ गुरुदेव के श्री मुख से महामंत्र श्रवण के साथ हुआ। मंगलाचरण जयपुर शहर कन्यामंडल द्वारा किया गया। चीफ ट्रस्टी श्रीमती शांता जी पुगलिया ने कन्याओं को संबोधित करते हुए कहा हम अनेकांत को अपनाएं तो सामंजस्य बना रहेगा। I Can, You Can और We Can का बहुत सुंदर उदाहरण देते हुए उन्होंने समूह में रहकर कार्य करने की प्रेरणा दी।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती पुष्पा जी बैद ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में बेटियों को संबोधित करते हुए कहा कि रिश्ते पक्षी की तरह होते हैं उन्हें जोर से पकड़ने पर मर सकते हैं ढीले छोड़ने पर उड़ सकते हैं प्रेम से पकड़ने पर साथ रह सकते हैं अतः उन्हें सहेज कर रखना होता है। जीवन की सम विषम परिस्थितियों में जो सम भाव रखता है वही सामंजस्य बना कर रख सकता है। कन्याओं को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि कन्या मीठे पानी का स्रोत बने। स्वयं में सहनशीलता का विकास कर Ego को दरकिनार करें तभी सामंजस्य बना रह सकता है। गुलाब बाग, इंदौर, लुधियाना, रायपुर, बीदासर, बालोतरा तथा दिल्ली कन्या मंडल ने सामंजस्य पर कविता, गीतिका, न्यूज चैनल आदि विभिन्न माध्यमों से सुंदर प्रस्तुति दी।

चतुर्थ सत्र के मुख्य अतिथि श्रीमान दिलीप जी सरावगी का परिचय कन्या मंडल संयोजिका श्रीमती प्रज्ञा जी नौलखा बाँठिया ने दिया। मुख्य अतिथि श्रीमान दिलीप जी सरावगी ने अपने वक्तव्य में कहा - हारमोनी एक जीवन दर्शन है। Harmony क्यों, किसके साथ और कैसे? इस को समझाते हुए उन्होंने कहा हमारी बेटियां स्वयं के साथ निषेधात्मक भावों को छोड़कर पॉजिटिविटी के साथ आगे बढ़ें। Emotions पर कंट्रोल करें, खुद स्वयं पर विश्वास कर स्वयं से सामंजस्य बिठाना प्रारंभ करें। आगे उन्होंने कहा अभातेमम में श्रीमती पुष्पा जी बैद जैसी धीर गंभीर राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं श्रीमती तरुणा जी बोहरा जैसी Intelletual महामंत्री सोने पर सुहागा है। जिनकी छत्रछाया में कन्याएँ सर्वांगीण विकास करेंगी।

महामंत्री तरुणा जी बोहरा ने मुख्य अतिथि श्रीमान दिलीप जी सरावगी के प्रति आभार व्यक्त किया तथा अपने 2 minute Dose में दूध और पानी का सुंदर उदाहरण देते हुए कन्याओं को सामंजस्य से कैसे रहना है यह बताते हुए कहा कि जब हम साथ रहते हैं तो छोटी-छोटी बातों को नजरअंदाज करें तभी सामंजस्य से रह सकते हैं।

अंत में कन्या मंडल राष्ट्रीय प्रभारी रमण जी पटावरी ने अधिवेशन सत्र में उपस्थित सभी के प्रति आभार व्यक्त किया तथा सभी कन्याओं के प्रति शुभकामना व्यक्त करते हुए उन्हें लक्ष्मी, दुर्गा, जगदंबा बनने के साथ-साथ अन्नपूर्णा जुमना बनने की प्रेरणा देते हुए सत्र का समापन किया। कार्यक्रम का सुंदर संचालन कन्या मंडल संयोजिका सुश्री याशिका खटेड़ ने किया।

पंचम दिवस - साधारण सभा

विषय - Non Voilence

दिनांक 25.7.20, पांचवें सत्र का शुभारंभ महातपस्वी आचार्य प्रवर के मुखारविंद से मंगल पाठ श्रवण के साथ हुआ। सर्वप्रथम राष्ट्रीय कन्या मंडल प्रभारी श्रीमती रमन जी पटावरी ने अधिवेशन में उपस्थित सभी बहनों का स्वागत किया। आरोहण



अधिवेशन के वीडियो की प्रस्तुति दिखाई गई। मंगलाचरण के द्वारा पाली कन्या मंडल ने मंगल भावों की प्रस्तुति दी।

महाश्रमणीवरम के पावन संदेश का वाचन ट्रस्टी श्रीमती प्रकाश देवी तातेड़ ने किया। चीफ़ ट्रस्टी श्रीमती शांता जी पुगलिया ने अपनी स्नेह भरी वाणी से सर्वप्रथम राष्ट्रीय कन्यामंडल प्रभारी रमन जी पटावरी एवं टीम को आरोहण अधिवेशन की सफलता की बधाई दी एवं कन्याओं को संबोधित करते हुए कहा कन्याएँ संस्कारों की सुरक्षा वाहक है वे चिंतनशील, श्रद्धा शील और विवेक शील है। संघ व एवं संघ पति के प्रति समर्पित हैं, धार्मिक दृष्टि से जागरूक है अपने दायित्वों के प्रति पूर्ण समर्पित है। तेरापंथी कन्याएँ अपने कृतत्व क्षमता से देश ही नहीं विदेशों में भी अपना परचम लहरा रही है संघ के गौरव में श्री वृद्धि कर रही है। कन्याओं के प्रति शुभकामना प्रेषित करते हुए उन्होंने कहा कन्याएँ अपनी मर्यादाओं को ध्यान में रखकर उंचाई पर आरोहण करें।



राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती पुष्पा जी बैद ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में अहिंसा की सुंदर व्याख्या करते हुए कन्याओं को छोटे-छोटे टिप्स एवं सुंदर उदाहरणों द्वारा अनावश्यक हिंसा से बचने का उपाय बताया। कन्या भ्रूण हत्या पर बहुत ही सुंदर कविता के माध्यम से समस्त कन्याओं को भ्रूणहत्या ना करने के संकल्प का आह्वान किया। बेटियों को देश का गौरव बताते हुए कहा कन्याएँ संस्कारों की राह पर चलकर विकास के नए सोपान पर आरोहण करें।

राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कन्या मंडल की पूरी टीम को अधिवेशन आयोजन की सफलता की बधाई दी।

कन्या मंडल के अदम्य उत्साह से किए गए कार्यों को राष्ट्रीय कन्या मंडल प्रभारी श्रीमती रमण पटावरी ने प्रतिवेदन के माध्यम से सब से खबरू कराया। रमनजी पटावरी ने कन्या मंडल को उनके किए गए कार्यों के लिए शुभांशंसा दी और शुभ भविष्य के लिए मंगल कामना प्रेषित की।

कन्या मंडल संयोजिका याशिका जी खटेड़ व प्रज्ञा नौलखा बाँठिया सहित 65 संयोजिकाओं ने बहुत ही शानदार प्रस्तुति कन्या मंडल कटघरे में दी, जिसमें विभिन्न कन्या मंडल की संयोजिकाओं के साथ छोटे-छोटे सवाल जवाब के द्वारा तेरापंथ कन्या मंडल की खूबियों को बताया गया। पूरे राष्ट्र से कन्याओं की एक ही आवाज आई, अखिल भारतीय तेरापंथ मंडल है खास, क्योंकि इस मंच पर होता है कन्याओं का सर्वांगीण विकास।

इस सत्र के मुख्य अतिथि श्रीमती शिल्पा जी बैद का विस्तृत परिचय राष्ट्रीय संयोजिका प्रज्ञा जी नौलखा बाँठिया ने बेहतरीन अंदाज में दिया। शिल्पा जी बैद ने बहुत ही सरल शब्दों में आरोहण का अहिंसा से संबंध स्थापित करते हुए इसकी समुचित व्याख्या की। आरोहण क्यों? कैसे और किस दिशा में करें? इसको बताते हुए उन्होंने कहा कि हम सही पथ का चुनाव करें भगवान महावीर के द्वारा बताए गए व्रतों की अनुपालना करें तो हमारा सही रूप में आरोहण हो सकता है आरोहण हो हमारे चिंतन में, विकास में, आचार विचार में। अहिंसा का चुनाव कर नकारात्मक चिंतन से हटे और आशावादी बने। प्रमोद भावना का विकास करें और अहिंसा परमो धर्म को अपनाकर अपना आत्मिक आरोहण करते जाएं।

Appreciate करें, Realistic बनें, optimisticly सोचें और Non violence को अपनाएँ।

महामंत्री श्रीमती तरुणा जी बोहरा ने मुख्य अतिथि का धन्यवाद ज्ञापित किया अपने 2 मिनट Dose में समस्त कन्या मंडल को अधिवेशन की बधाई दी। उन्होंने कन्याओं को संबोधित करते हुए कहा कि वह प्लेन पेपर नहीं बने बल्कि अपनी विशेषताओं को उस में उकेर कर महत्वपूर्ण दस्तावेज बने जिसे सब संभाल कर रखना चाहे स्वयं का आरोहण कर दूसरे के आरोहण में भी सहायक बने। कन्या मंडल कटघरे में कार्यक्रम के दूसरे सत्र में कन्याओं ने बताया कि अखिल भारतीय तेरापंथ कन्या मंडल के निर्देशन में सचमुच उनका आरोहण हो रहा है। उनके कार्य क्षमताओं में अभिभूत वृद्धि हो रही है, वह एक तरफ समाज में अपनी पहचान बनाने में सक्षम हो रही है तो दूसरी तरफ माननीय प्रधानमंत्री जी के स्वच्छ भारत अभियान कैम्पेन से जुड़कर भारतीय नागरिक होने का धर्म भी निभा रही है।

समापन सत्र में गत 1 वर्ष में अभातेकम द्वारा दिए गए कार्यों की समीक्षा करते हुए राष्ट्रीय कन्या मंडल प्रभारी ने Star Performers of The Year शाखा मंडलों की घोषणा की तथा आरोहित होती कन्याएं भर रही है उड़ान इन शब्दों के साथ पुरस्कार वितरण को अंजाम दिया और सभी के प्रति आभार ज्ञापित किया।

अधिवेशन आरोहण का समापन राष्ट्रीय अध्यक्ष के स्नेह संपोषित स्वरों के साथ हुआ। पूरे सत्र का सफल संचालन राष्ट्रीय कन्या मंडल सह प्रभारी नमिता जी सिंघी ने कुशलता पूर्वक किया। पांचों सत्र में प्रचार प्रसार मंत्री श्रीमती निधि सेखानी एवं सह प्रभारी सोनम बागरेचा ने जूम पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

स्कूटी राइडर नीतू चौपड़ा

बालोतरा की बेटी सुश्री नीतू चोपड़ा सुपुत्री श्रीमान इंगरचंदजी - अंजू देवी चोपड़ा। हैदराबाद में हुए प्रियंका रेडी गैंगरेप के विरोध में कश्मीर से कन्याकुमारी 4600 किलोमीटर की सोलो राइड 18 दिन में एक्टिवा पर पूरा किया। 10 राज्यों में आत्म सुरक्षा का पैगाम देने वाले संपूर्ण विश्व की पहली महिला एक्टिवा राइडर बन चुकी है।

लड़कियां घर से बाहर निकलो राइड फॉर रेवोलुशन उपलब्धि इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड में पहले ही दर्ज हो चुकी है अत्यंत गर्व की बात है कि दिनांक 24 जुलाई 2020 को नीतू चोपड़ा का नाम **Companion Book of World Record** रिकार्ड में शामिल हुआ है।

बेटियों को आत्मनिर्भर बनाने के अनोखे मिशन को लेकर महिला सशक्तिकरण की मशाल थामकर अलख जगाने वाली कन्या मंडल की सदस्य नीतू चोपड़ा को तेरापंथ समाज, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल एवं तेरापंथ कन्या मंडल की ओर से हार्दिक बधाई। आप कन्या मंडल का गौरव है गर्व है।

नीतू ने 15 दिसम्बर 2019 को रामबन (कश्मीर) से यात्रा शुरू की तथा 3 जनवरी 2020 को कन्याकुमारी होते हुए त्रिवेन्द्रम में यात्रा का समापन कर MTV RODIES के ऑडिशन में दिल्ली पहुँची। MTV ROADIES पर भी नीतू की यात्रा को दिखाया गया।

हो भविष्य उज्ज्वल ही उज्ज्वल

शुभकामना देता यह अंतर स्थल।

नीतू चोपड़ा-मो.नं.7737677150

LET'S SUPPORT GIRL'S FREEDOM

लड़कियों घर से बाहर निकलो
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, आत्मनिर्भर बनाओ!

4600Kms Activa Ride By Free Flying Eagle Neetu Chopra

@ineetuchopra | **ineetuchopra@gmail.com** | **7737677150**

CHAMPIONS BOOK OF WORLD RECORDS
Where Performance Records

CHAMPIONS Book of WORLD RECORDS

Certificate

World's first female rider on Activa from Kashmir to Kanyakumari 4600kms in 18days

Name of the Record Holder	Neetu Chopra
Date of Birth	4th March, 1989
Place of Residence	Balotra, Barmer, Rajasthan, India
Area of Expertise	Adventure for a Cause
Details of Record	Solo ride for 18 days to protest against gang rape of Dr.Priyanka Reddy, Hyderabad covering 10 states of India (4600 kms). She also delivered sessions of Self-defense at various places under the campaign- Ladkiyon Chalo Se Bahar Niklo!
Nature of Record	Record

Your outstanding work speaks volumes of your amazing aptitudes.
Your commendable record is being placed in our book of records.

Date of issue: 24th July, 2020

De Pattabhi Ram, Turlapati
Registrar of Records
Champions Book Of World Records

DO SOMETHING GREAT

ज्ञान चेतना प्रश्नोत्तरी - अगस्त 2020

प्रिय बहनों, सादर जय जिनेन्द्र!

संदर्भ पुस्तक - संबोधि पृष्ठ संख्या 104 से 124 (अध्याय 10 और 11)

कर्मवाद पृष्ठ संख्या 119 से 142 (कर्मवाद के अंकुश, प्रतिबद्धता का प्रश्न)

(अ) मुझे पहचानो -

1. असंयम के द्वारा मेरे द्वार खुलते हैं -
2. भगवान महावीर ने मुझ पर सर्वाधिक बल दिया-
3. मेरी प्रक्रिया के बारह सूत्र हैं।
4. मेरी उपसंपदा के पांच सूत्र हैं।
5. मैं साधना का केन्द्र बिन्दु हूँ -
6. मैं वर्तमान क्षण में होता हूँ -
7. मैं कर्म शास्त्र का सूत्र हूँ -
8. मेरा कार्य है मार डालना -
9. यह नयी बात महावीर ने कही कि मुझे बदला जा सकता है।
10. मुझे 'रसविपाक' भी कहा जाता है।
11. मुझसे मुक्त होने के पांच सूत्र हैं
12. मेरे अणु का भार 200 होता है।
13. मैं कर्म अस्तित्व का तीसरा कारण हूँ
14. मुझ पर एक व्यक्ति ने इक्कीस बार थूका।
15. मैं रसायना का "सुपर प्लान्ट" हूँ -

(ब) जोड़ी मिलाएं -

- | | |
|------------------|-----------------|
| 1. सति | A तिर्यच गति |
| 2. संयत जीवन | B मार्ग |
| 3. निकृति: | C अवधारणा |
| 4. प्राज्ञ पुरुष | D सार्वभौम नियम |
| 5. अनीदृशम् | E प्ररूपक |
| 6. अध्वा | F निर्लिप्तता |
| 7. सत्य | G अमीषा |
| 8. संज्ञा | H पंडित |
| 9. प्रवेदी | I श्रेय |
| 10. एकत्व भावना | J अनुपम |

- नोट :
- प्रश्नों के उत्तर Google Form के द्वारा 25 अगस्त तक भेजने रहेंगे।
 - Google Form की Link Team Group में सूचित कर दी जायेगी।
 - सभी शाखा के अध्यक्ष/मंत्री से अनुरोध है कि Link अपनी शाखा के सदस्यों तक पहुँचाये।
 - प्रश्नोत्तरी में संभागी बहनों से अनुरोध है कि Link के लिए अपने अध्यक्ष/मंत्री से सम्पर्क करें।
 - अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें - श्रीमती मधु देरासरिया, सूत्र
- मो. : 9427133069 E-mail : madhujain312@gmail.com

जुलाई माह के उत्तर ▼

(अ) रिक्त स्थान की पूर्ति करें -

- | | | |
|-----------|---------------------|----------|
| 1. परिणाम | 2. मन का निरोध करना | 3. नाम |
| 4. मद्रास | 5. समय | 6. यह |
| 7. हमारा | 8. राग | 9. गर्मी |

(ब) वाक्य सही या गलत है बताइये -

- | | | |
|---------|---------|--------|
| 1. सही | 2. गलत | 3. सही |
| 4. सही | 5. गलत | 6. गलत |
| 7. गलत | 8. गलत | 9. सही |
| 10. सही | 11. गलत | |

जुलाई माह के भाग्यशाली विजेता

जुलाई माह में कुल 2654 प्रविष्टियां प्राप्त हुई।

1. श्रीमती रेखा छाजेड़ - देवगढ़ मदारिया
2. श्रीमती सोनम सेठिया - गंगाशहर
3. श्रीमती रेखा मालू - उत्तर हावड़ा
4. श्रीमती सुमन नाहटा - दिनहट्टा
5. श्रीमती अक्षिका मेहता - उदयपुर
6. श्रीमती सुषमा गुलगुलिया - कोलकत्ता
7. श्रीमती रंजू पटवा - जोधपुर
8. श्रीमती सरिता बोथरा - ढेकियाजुली-आसाम
9. श्रीमती निर्मला नौलखा - कांदिवली-मुंबई
10. श्रीमती भारती लोढ़ा - जगदलपुर

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल को मिलने वाला अनुदान

- | | |
|----------|--|
| 1,00,000 | श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ महिला मंडल अहमदाबाद द्वारा सप्रेम भेंट। |
| 51,000 | श्रीमती लताजी बजरंगजी जैन-बेंगलुरु द्वारा सप्रेम भेंट। |
| 31,000 | श्रीमती मनीता देवी - सोहनलालजी चौपड़ा के पौत्र जन्म के उपलक्ष में सप्रेम भेंट। |
| 31,000 | श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ महिला मंडल इन्दौर द्वारा सप्रेम भेंट। |
| 21,000 | श्रीमती सुशीला देवी - वृद्धिचंद जी सुतरिया अहमदाबाद के नूतन गृह प्रवेश के उपलक्ष में सप्रेम भेंट। |
| 21,000 | श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ महिला मंडल दुर्गापुर द्वारा सप्रेम भेंट। |
| 21,000 | श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ महिला मंडल मैसूर द्वारा सप्रेम भेंट। |
| 21,000 | श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ महिला मंडल गुरुग्राम द्वारा सप्रेम भेंट। |
| 21,000 | श्रीमती सुधा-रमेशजी नौलखा, मैसूर द्वारा अपनी बेटी 'नेहा' के विवाह के उपलक्ष में सप्रेम भेंट। |
| 21,000 | चुरु निवासी, बड़ौदा प्रवासी स्व. चम्पालालजी पारख की पौत्री, श्री राजेन्द्र-भारतीजी पारख की पुत्री 'फाल्गुनी' के विवाह के उपलक्ष में सप्रेम भेंट। |
| 11,000 | श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ महिला मंडल ईस्लामपुर द्वारा सप्रेम भेंट। |
| 11,000 | श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ महिला मंडल अमराईबाड़ी द्वारा भावना चौका हेतु सप्रेम भेंट। |
| 11,000 | श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ महिला मंडल पर्वत पाटिया द्वारा भावना चौका हेतु सप्रेम भेंट। |

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा सभी अनुदानदाताओं के प्रति हार्दिक आभार !

अध्यक्षीय कार्यालय : श्रीमती पुष्पा बैद - "पावन" बी-106/107, विद्युत नगर-बी, क्वीन्स रोड, जयपुर - 302021
मो. : 9314194215, 8209004923 ईमेल pushpabaid312@gmail.com

महामंत्री कार्यालय : CA तरूणा बोहरा - 301, साधना पैलेस, मराठा कॉलोनी, दहिसर (पूर्व) मुम्बई - 400068
मो. : 8976601717 ईमेल tarunajain365@gmail.com

कोषाध्यक्ष कार्यालय : श्रीमती रंजू लुणिया - लुणिया मार्केटिंग प्रा. लिमिटेड, बड़ा बाजार, छेरा बस स्टॉप के पास,
शिलोंग-793001 (मेघालय) मो: 94361033330, 8787645164 ईमेल Implshillong@gmail.com

नारीलोक संपादन सहयोगी : श्रीमती गुलाब बोथरा मो : 9462342976

नारीलोक देखें website : www.abtmm.org